## अशांत भोला

घर से अगर निकल आजकल
सोच बहुत संभल आजकल

भीड़ सड़क पर मजमा देख
बचकर राह बदल आजकल

बेक़ाबू मिज़ाज शहर का
ख़ूनख़राबा ख़लल आजकल

शोर मुनादी झण्डे- नारे
गर्म सियासी दल आजकल

सनक मिज़ाजी लहू के प्यासे
मारी गई अक़्ल आजकल

चौक-चौराहे दहशतगर्दी
आम बात है क़त्ल आजकल

राजनीति में दल-दल की पूजा
तुलसीदल बेदख़ल आजकल

कहने को तो सब कह जाते
नहीं मुकम्मल ग़ज़ल आजकल

## डॉ. डी एम मिश्र

मुझको भी कोई पढ़े कल क्या पता
मुझको भी कोई सुने कल क्या पता

इसलिए रहता ग़ज़ल के गाँव में
जो है बोया वो उगे कल क्या पता

ख़्वाब तो महलों से भी ऊंचे मेरे
झोंपड़ी सच बोल दे कल क्या पता

इसलिए पिड़वर से आंगन लीपते
हम न हों ,खुशबू रहे कल क्या पता

आज ही शिकवे गिले सब दूर हों
फिर न ये अवसर मिले कल क्या पता

आइये खुल्ले में रहना सीख लें
मौत आये ढूंढने कल क्या पता

फ़ातिहा पढ़ने वो आयेगा ज़रूर
दर्द मेरा बांट ले कल क्या पता

पर, चिता क्या क्या जलायेगी मेरा
शेर ये ज़िंदा रहे कल क्या पता


ISSN:2583-8849